HSSLiVE.IN

चरित्रगत विशेषताएँ (Character Sketches)

चरित्रगत विशेषताएँ

- प्रश्न पत्र में दी गई प्रसंग को ध्यान से पढ़कर आशय ग्रहण करें।
- पात्र के चरित्र की विशेषताएँ पर ध्यान रखें।
- पात्र के चरित्र की विशेषताओं को संक्षिप्त रूप में लिखने का प्रयास करें।
- विशेषताओं को वाक्य या सरल शब्दों में लिखने का प्रयास करें।

कुल 4 अंक का प्रश्न होगा। पात्र की चरित्रगत विशेषताएँ समझकर ध्यान से लिखें तो पूरे अंक ज़रूर मिलेगा।

चरित्र पर टिप्पणी

(1) बादशाह के ख़त के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।

- ❖ तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया।
- ❖ दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। वे क्या यह नहीं जानते कि मैं भी उनको रोता हुँ।
  - उपर्युक्त वाक्यों के आधार पर बादशाह के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

प्रजा हितैषी शासक

बादशाह बहादुर शाह ज़फर दिल्ली के अंतिम मुगल शासक थे। 1857 की स्वतंत्रता के पहली लड़ाई को परास्त करके ब्रिटीश सरकार ने उन्हें कैदी कालापानी दंड देकर रंगून भेज दिया। वहाँ सख्त नज़रबंदी में उन्हें बहुतधिक पीड़ाएं झेलने पड़ा। उनके बड़ी बेटी दिल्ली में अंग्रेज़ों की कैद में थी। 'बेटी के नाम...' कैद में रहकर बहादूर शाह ज़फर द्वारा अपनी बेटी को लिखी गई पत्र है।

कैद में रहकर भी वह अपनी बेटी को चिट्ठियाँ भेजते रहा। अपने बेटी का जवाबी पत्र उनको अपनी बेटी की दर्दभरी वाणी जैसा लगा। वह आँसूनामा तीन बार पढ़कर सुनने पर भी उनके दिल को सांत्वना नहीं मिला। अपनी परिवार के प्रति गहरा प्यार उनके चरित्र की बड़ी विशेषता है।

स्वभाव से शांतिप्रिय, ईश्वर और धर्म में दृढ़ आस्था रखनेवाला ज़फर उन महा पुरुषों में एक था, जिसको अपने देश और परिवार के प्रति गहरा प्रेम था।

बादशाह अपने देशवासियों के प्रति प्रेम और सहानुभूति रखनेवाले प्रजा हितैषी शासक थे। अपने देश और परिवार से कोसों दूर रहते समय में बादशाह का मन अपने परिवार और देशवासियों के प्रति सदा व्यस्त रहा। कैदी में रहते समय भी वह अपने प्रजा के बारे में सोचकर रोते है। अपने बेटी को लिखी गई खत में अपने देश के बुरी हालत का जिक्र भी हुआ है। उन का मन अपने देश के प्रति आकुल थे।

साथ ही कैदी में रहकर भी वह अपने साथियों पर भरोसा रखनेवाले थे। वे बड़े साहसी भी थे। इतने सख्त नज़रबंदी में रहते समय भी वह अपने बेटी को चिट्टी लिखकर किसी तरह उसे दिल्ली तक पहुँचाने की कोशिश करते हैं।

पत्र हमें एक आदर्श प्रिय, अपने देश केलिए समर्पित राजा का परिचय कराता है। वास्तव में वह अपने प्यार, देश स्नेह आदि से एक आदर्श सम्राट की छाप पाठकों के मन में छोड़ते है।

HSSLiVE.IN

(2) बादशाह के ख़त के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।
"एक दफ़ा सुना, जी न भरा। फिर कहा, बेटा फिर सुनाना। फिर सुना। वह भी रोया"
बादशाह के बेटे के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

कैदी बाप के बेटा

बादशाह बहादुर शाह ज़फर दिल्ली के अंतिम मुगल शासक थे। 1857 की स्वतंत्रता के पहली लड़ाई को परास्त करके ब्रिटीश सरकार ने उन्हें कैदी कालापानी दंड देकर रंगून भेज दिया। साथ उनकी बेटा भी था। वहाँ सख्त नज़रबंदी में उन्हें बहुतधिक पीड़ाएं झेलने पड़ा। उनके बड़ी बेटी दिल्ली में अंग्रेज़ों की कैद में थी। 'बेटी के नाम...' उस कैद में रहकर बहादूर शाह ज़फर द्वारा अपनी बेटी को लिखी गई पत्र है।

कैद में रहकर भी वह अपनी बेटी को चिट्ठियाँ भेजते रहा। बेटी द्वारा लिखी गई खत किसी तरह रंगून पहुँचने पर बेटा उसे पढ़कर पिताजी के सुनाते है। अपनी बहन का खत पढ़कर वह रोते है। उनको अपने परिवारवालों से स्नेह, प्यार एवं आस्था है। दूर देश में कैद में रहनेवाली बहन के खत पढ़कर उनकी आँखें आँसुओं से भीग जाते है।

वह अपने पिता के आज्ञाकारी बेटा है। अपने पिता बार-बार खत पढ़ने केलिए कहते हैं। पिता के दु:ख वह समझते है, इसलिए वह कुछ कहे बिना, खत बार-बार पढ़ते हैं।

कैद में रहकर भी उसको अपनी बहन के प्रति प्रेम और सहानुभूति हैं। बहन के खत बार-बार पढ़कर उसकी आँखें आँसू से भीग जाते है। पत्र हमें एक स्नेह संपन्न बेटा और भाई का परिचय कराते है, जो दूर देश में कैद रहकर भी अपने बहन एवं अन्य परिवारवालों के प्रति गहरा प्रेम एवं आस्था है।

HSSLiVE.IN

(3) "ज़मीन एक स्लेट का नाम है" आत्मकथांश के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।

"दीदी बहुत भावुक हो गई थी और बात-बात में रो पड़ती थी"।
दीदी के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

बेटी की शादी और ज़मीन

एकांत श्रीवास्तव का आत्मकथांश "ज़मीन एक स्लेट का नाम है" के प्रमुख पात्र हैं दीदी। वह लेखक के बहन है। आत्मकथांश दीदी के शादी और उसकेलिए पैसे केलिए ज़मीन बेचने में विवश होनेवाले पिताजी के दु:ख की कहानी बताते हैं।

अपनी बेटी की शादी केलिए पिताजी तो कुछ हज़ार रुपए भविष्य निधि से लाए थे। लेकिन शादी आजकल के खर्च और आड़ंबर उतना बड़ा हो गई है कि बाकी रुपए केलिए पिताजी को कम कीमत में अपने ज़मीन बेचने में विवश पड़ा। ये सब देखकर वह बेटी दु:खी हुई। अपने पिताजी और भाई का दु:ख वह समझती है। उनके मन में परिवारवालों से प्यार ज़रूर है।

वह समझदारी बेटी एवं बहन हैं। एक बेटी होकर वह अपने पिताजी का दु:ख, ज़मीन के प्रति आस्था आदि समझते है। इसलिए वह शादी के खर्च केलिए दौड़नेवाले पिताजी और भाई को देखकर रो पड़ती है।

आत्मकथांश हमें एक प्यारी बेटी और बहन का परिचय कराती है, जो अपने पिताजी और भाई के दु:ख में रोती है।

(4) "ज़मीन एक स्लेट का नाम है" आत्मकथांश के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।

HSSLiVE.IN

- "एक दो दिन बाद कभी चलेंगे पिताजी। कुछ फुरसत में। अभी तो......."
- यह वाक्य मुझे आहत कर गया।
- मैंने झुककर मिट्टी को छुआ - चुपचाप - पिताजी के देखे बगैर।

इन कथनों के आधार पर लेखक के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

"ज़मीन एक स्लेट का नाम है" , एकांत श्रीवास्तव का आत्मकथांश है, जो अपनी बहन की शादी और उससे संबंधित कुछ अविस्मरणीय घटना है। लेखक की बहन की शादी होनेवाली है। शादी केलिए वे सब गाँव पहुँचा। शादी केलिए पिताजी तो कुछ हज़ार रुपए भविष्य निधि से लाए थे। फिर भी खर्च ज्यादा अधिक था। लेखक के पिताजी अपने ज़मीन बेचते है।

लेखक समझदार बेटा है। ज़मीन की रजिस्ट्री के एक दिन पहले पिताजी लेखक के साथ खेत चलने को कहते है तो पहले लेखक तो कुछ चकित हुआ। तुरंत ही वह पिताजी की अवस्था समझते है। घर में मेहमान और विवाह से संबंधित ज़रूरी काम होने के कारण वह पहले पिताजी से कुछ फुरसत माँगते है। लेकिन पिताजी के इच्छा उसके मन में आहत करते हैं और वह उसके साथ खेत चलते हैं। अपने पिताजी की पीड़ा में वह मेहमान, शादी की तैयारियाँ सबकुछ भूलते है।

खेत पहुँचकर चुपचाप टहलनेवाले पिताजी को देखकर लेखक उसके भीतर के हाहाकार समझते है। वह चुपचाप झुककर उस मिट्टी को छूते है तो उसे लगता है कि वह ज़मीन बचपन की कविता लिखी गई स्लेट होगा या अपने रक्त भरी लाल फूल।

लेखक अपने पिता के आज्ञाकारी बेटा है। जीवन की विषमता में वह अपने पिताजी के हाथ पकड़ते हैं। कभी भी वह पिताजी को अकेले नहीं छोड़ते है। साथ ही अपनी बहन केलिए वह प्यारी भाई भी है।

HSSLiVE.IN

(5) "ज़मीन एक स्लेट का नाम है" आत्मकथांश के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।

- फिर दूसरों की ज़मीन में क्या जाना।
- अगले दिन रजिस्ट्री तक पिताजी खामोश रहे। बस "हूँ-हाँ" करते हुए।
- कौन सुन सकता था उनके नि:शब्द विलाप को।

इन कथनों के आधार पर पिताजी के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

पिताजी का सूखे आँसू

"ज़मीन एक स्लेट का नाम है" , एकांत श्रीवास्तव का आत्मकथांश है, जो अपनी बहन की शादी और उससे संबंधित कुछ अविस्मरणीय घटना है। लेखक के घर में बहन की शादी होनेवाली है। शादी केलिए वे सब गाँव पहुँचा। शादी केलिए पिताजी तो कुछ हज़ार रुपए भविष्य निधि से लाए थे। फिर भी खर्च ज्यादा अधिक था। खर्च केलिए उनके पिताजी को अपनी ज़मीन बेचना पड़ता है।

उस ज़मीन से पिताजी का गहरा लगाव है। धन इकट्ठा करके खरीदा हुआ ज़मीन बेचने पर वह बेचैन होते है। वे उसे कभी भी अपने हाथ से छोड़ना नहीं चाहते हैं। लेकिन अपनी बेटी की शादी केलिए पैसे की ज़रूरत आई तो, वह ज़मीन बेचने केलिए विवश हो पड़ते है। पिताजी को अपनी बेटी और परिवारवालों से प्यार और ममता अवश्य है।

अपनी ज़मीन दूसरों की हो जाती है। इस बात को सोचते ही असहनीय पीड़ा का अनुभव करते हैं। लेकिन वह धैर्यशाली पिताजी अपने दु:ख को सहते है। बिकनेवाले खेत तक पहुँचकर टहलनेवाले उस पिताजी के ध्यान में अपने आस-पास कोई भी बात नहीं आती। वे वहाँ शाम तक टहलता रहा। वे खामोश भी थे। लेकिन उनके भीतर हाहाकार ज़रुर था, जो वह चुपचाप सहते है।

रजिस्ट्री के दिन भी वे खामोश रहे। कोई पूछें तो केवल "हूँ-हाँ" करते रहे। वह अपनी वेदना मन ही मन सहते है। वे जानते हैं कि गाँव में इज़्ज़त बनाए रखने केलिए धन के साथ ज़मीन की भी ज़रूरत है। यह सोच विचार में उनकी आँसू सूख गई है।

HSSLiVE.IN

(6) ये कथन पढ़ें:

- ❖ मैं प्यार से उसको मुरकी बुलाती थी कभी बुलाकी।
- ❖ री मुरकी! किसको कानों में पड़ेगी और किसकी नाक में बुलाक की तरह चमकेगी?
- ❖ किसी दयालु व्यक्ति से राह का भाड़ा लेकर लौट आई, नहीं तो कहाँ भटकती।
- ❖ मेरे जीते जी कभी कोई तुझसे यहबी नहीं छीनेगा।

इन कथनों के आधार पर राजवंती के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

स्नेहमयी माँ

अमृता प्रीतम की प्रसिद्ध कहानी 'मुरकी उर्फ बुलाकी' का प्रमुख पात्र है 'राजवंती'। वह कुमार की स्नेहमयी माँ है। दया, ममता आदि मातृ-सहज गुणों की मूर्ति है राजवंती माँ। परोपकार उनकी चरित्र की बड़ी विशेषता है। अपने घर का पुराना नौकर की मातृहीन बेटी को आश्रय एवं माँ का प्यार दिया। वह लड़की उसकेलिए केवल नौकरानी नहीं, बल्कि अपनी बेटी ही है। वह उसे प्यार से मुरकी बुलाती थी कभी बुलाकी। मुरकी के भविष्य के बारे में सोचकर वह चिंतित थे। कुमार के जन्मदिन जैसे विशेष अवसरों पर वह उसको सोने-चाँदी के आभूषण देते थे। वह ज़रूर एक बेटी के भविष्य के बारे में चिंतित माँ का प्यार ही है। वह अपने घर की एक कोठरी उसको दिया।

पति द्वारा उपेक्षित मुरकी किसी तरह राजवंती के यहाँ लौट आता है। राजवंती उसे अभय दिया, साथ ही उसके पुरानी कोठरी की चाबी भी। अपने बेटे कुमार से भी वह वचन दिलाती है कि कभी भी मुरकी को इस कोठरी से नहीं निकालेगा। इस तरह निरालंब मुरकी को मृत्यु तक आश्रय दिया। इस प्रकार प्यार, ममता, करुणा और सहानुभूति भरे एक माँ को हम यहाँ देख सकते हैं। लड़कियों को अभिशाप माननेवाले इस समाज में अपने घर के पुराना नौकर की मातृहीन बेटी को उन्होंने अभय एवं माँ का प्यार दिया।

(7) ये कथन पढ़ें।

- ➢ तुझे तो वह अपने हाथों से नहीं खिलाती थी, अपनी जान से खिलाती थी।
- ➢ बड़े सुंदर पहाड़ी गीत गाती थी। उड़ते पंछी भी खड़े हो जाते थे।
- ➢ मन के सौदे में जब उसका मन ही मुकर गया तो फिर तन को क्या ढूँढ़ना था?
- ➢ इस कोठरी की चाबी उसके नेफ़े में खोंसी हुई थी। उसके माँस से चिपक गई थी।

कथनों के आधार पर मुरकी के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

HSSLiVE.IN

मासूम-सी मुरकी

अमृता प्रीतम की प्रसिद्ध कहानी 'मुरकी उर्फ बुलाकी' का प्रमुख पात्र है 'मुरकी'। एक मातृहीन लड़की। उसके पिता राजवंती माँ के घर के पुराना नौकर था। उनकी पत्नी मर गई है। बेटी मुरकी तो गाँव में चाचा के पास अकेले रहती है। बेटी की सुरक्षा केलिए उसने उसे राजवंती माँ के यहाँ ले आया। उसका असली नाम भी किसी को नहीं जानते थे। यह मुरकी और बुलाकी नाम तो राजवंती माँ ने रखे थे।

मुश्किल से बारह वर्ष की जैसी छोटी मासूम-सी लड़की। राजवंती माँ के बेटा कुमार तब चार वर्ष का था। मुरकी उसे उतना अधिक प्यार करते हैं कि वे उसे अपने हाथों से नहीं जान से खिलाती थी। कुमार भी उसका पीछा नहीं छोड़ता था।

सोलह वर्ष की आयू में उसको रूप खूब चढ़ गया। वे अच्छी तरह पहाड़ी गीत गाती थी। उनके गीत में उड़ते पंछी भी खड़े हो जाते थे।

बाप ने अपने गाँव में किसी दूजे से रिश्ता पक्की तो, साहसी मुरकी सबकुछ छोड़कर रात ही रात में एक शहरी लड़के के साथ भाग गई। पिता द्वारा पक्की गई शादी केलिए वे बिलकुल तैयार नहीं थे।

चार-छह महीने उसके साथ किसी शहर में रही। हाथ में जो कुछ था, उसे लगाकर घर बनाया। बाद में पति द्वारा किसी सराय में छोड़ते वक्त वह किसी दयालू व्यक्ति से राह का भाड़ा लेकर राजवंती माँ के यहाँ लौट आई। पति द्वारा उपेक्षित हो तो उसके मन वितृष्णा से भर जाती है। वह आत्माभिमानी थे, पति को ढूँढ़ने केलिए वह कभी भी तैयार नहीं होते। उसकी राय में मन के सौदे में जब उसका मन ही मुकर गया तो फिर तन से कोई ज़रुरत नहीं।

राजवंती माँ उसे अपने घर की वह पुरानी कोठरी और उसकी चाबी देकर वायदा किया है कोई भी उसे कमरे से नहीं निकालेगा। अपनी मृत्यु तक वह राजंवती के घर में रहा। मृत्यू के बाद, जब उसके मरी को नहलाया तो उसके नेफ़े में खोंसी हुई चाबी राजवंती माँ को मिला। वह तो उसके माँस से चिपक गई थी।

कहानी हमें एक मातृहीन लड़की को दर्शाती है जो एक घर में बच्चे के देखभाल करते थे। उस घर में सबके प्रिय था वह मातृहीन लड़की। राजवंती में उसकेलिए माँ जैसा था।

(8) ये कथन पढ़ें।

HSSLiVE.IN

- माँ! मुरकी का ब्याह कब हुआ था? मैं तो कभी उसके पति को देखा नहीं?
- तू उसका पीछा नहीं छोड़ता था। कभी तू उसकी मुरकियों को मुट्ठी भर लेता था और कभी उलछ-उलछकर उसके बुलाक को पकड़ता था।
- इसने ढूँढ़ा नहीं उसको?
- कुमार की आँखें भर आई – शायद मर्द जाती की कोई लाज रखने केलिए।

कथनों के आधार पर कुमार के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

अमृता प्रीतम की प्रसिद्ध कहानी 'मुरकी उर्फ बुलाकी' का प्रमुख पात्र है 'कुमार'। अपने माँ के साथ गाँव में रहते हैं। कुमार को अपनी माँ और अन्य घरवाले से गहरा प्यार है, चाहे वह अपने घर के नौकरानी हो तो उसमें प्यार एवं ममता है।

अपने घर की नौकरानी की मृत्यु के बाद कुमार अपनी माँ से नौकरानी के बारे में पूछते है। उस नौकरानी तो कुमार को उसके चार वर्ष की आयू में अपनी जान से खिलाया था। बचपन में कुमार उसके पीछे नहीं छोड़ता था। कुमार भी बहुत प्यार और खुशी से नौकरानी की मुरकियों को मुट्ठी भर लेता था और कभी उलछ-उलछकर उसके बुलाक को पकड़ता था।

कुमार अपनी माँ का आज्ञाकारी बेटा है। अपने माँ के कहने पर वह अपने घर के नौकरानी केलिए घर के कोठरी देने केलिए तैयार होते हैं। वे दयालू है, नौकरानी की मृत्यु तक वह कभी भी उस कोठरी से उसे नहीं निकाला।

अपने घर के नौकरानी होकर भी मुरकी की कहानी सुनने में वे उत्सुक थे। अपने माँ द्वारा मुरकी के बारे में बताई गई बातें वे ध्यान से सुनते हैं। पति द्वारा उपेक्षित मुरकी के बारे में सुनकर उसके मन में क्षोभ का अंत न रहा।

मुरकी की कहानी सुनकर पहले तो उसकी आँखों का पानी आँखों में ही रहा। लेकिन मुरकी की कथा आगे सुनकर वह भी रोते है।

राजवंती माँ का बेटा कुमार समझदार है. प्यारे और माताजी का आज्ञाकारी बेटा है।

(9) "मशकवाला स्कूटर" के चरित्र पर टिप्पणी करते हुए वर्तमान समाज में ऐसे लोगों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

सहायक बिंदु:

- पितृविहीन बालक - माँ का उपदेश - राहगीरों को मुफ्त पानी पिलाना - अपने मन का बागशाह

HSSLiVE.IN

<u>मशकवाला पीर</u>

डॉ राज बुद्धिराजा के संस्मरण "वह भटका हुआ पीर" हमें एक असाधारण युवक का परिचय कराती है, जो इस आधुनिक ज़माने में देखने को दुर्लभ है। उनके बचपन में ही पिताजी की मृत्यु हो चुकी थी। घर में माताजी के अलावा और कोई नहीं था। एक स्कूटर था, उसे चलाकर माँ और अपने लिए दो जून रोटी का जुगाड़ करता था।

एक तीक्ष्ण गरमी के दोपहर में लेखिका को उसके स्कूटर में बैठने का अवसर मिला। पहले ही उसके मीठे शब्द सुनकर वे आश्चर्य हुए, क्योंकि इस कलंक भरी दुनिया में कलंकित आवाज़ों के बीच इस तरह के मधुर स्वर दुर्लभ ही है। वे बीच-बीच में स्कूटर रोककर राहगीरों की प्यास बुझाते रहा। आश्चर्य की बात तो यह है कि पानी की रेहड़ी से उसने एक-दो बार अपने मशक भरवाया और पैसे अदा किए।

वास्तव में यह युवक पीर जैसा था, क्योंकि ज़माने में घर के बुजुर्ग लोग भी पानी से वंचित रहते हैं, तो यहाँ राहगीरों को पानी पिलाते रहते है।

वह अपनी माँ का आज्ञाकारी बेटा है। मेहनती और परोपकारी है। पिता की मृत्यु के बाद वह मेहनत करके पैसे कमाते थे। माँ ने कहा "तू पानी पिलाया कर, पुण्य मिलता है।" तब से उस मशक से उनका रिश्ता शुरु हुआ। परोपकार और दयालू भी है, वे अपनी कमाई से एक भाग लेकर दूसरों के प्यास बुझाते है। वे ईमानदारी है। आत्मविश्वासी है, अपने माँ के बातें में उन्हें गहरा विश्वास है। घर में या किसी जगह बैठकर काम करने से अधिक सुख इस स्कूटर चलाकर दूसरों के प्यास बुझाने में मिलते है।

आजकल इस तरह के लोग बहुत दुर्लभ है। परोपकार की भावना हर व्यक्ति केलिए आवश्यक गुण है। बेसहारे को सहारा देते हुए हम महामानव या पीर बनते है। जलती दुपहरी में दिल्ली के सड़कों पर प्यासों की प्यास बुझानेवाले यह मशकवाला स्कूटर बिलकुल अलग व्यक्तित्व ही है।